

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।					
	<b>मूरत-उखाड़ (मूर्ति-उखाड़)</b>					
सतनाम	जहां बसे सतगुरु सतपुर देसवा भेषवा धरि पगु ढारहिं रे जी।	सतनाम	आय जगत में जीव समुझावहिं गावहिं निजु पद जानिउ रे जी।	सतनाम	आय धर कंधा शहर नगर में डंक दियो तहां आनिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	सुनि-सुनि काल करसि के उठेयो झूठ मृथा करि बानिउ रे जी।	सतनाम	तब मैं कहा अदल इहां रोपेव कोपेव जिव सभ जानिउ रे जी।	सतनाम	अहे भवानी जग तेहि मानी तोरि फोरि इहां आनेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	अपने ज्ञान में आनि बिचारी हारी जग सभ जानिउ रे जी।	सतनाम	एक विप्र नगर में रहिया प्रीती हमें उन्हें जानिउ रे जी।	सतनाम	यहे पंडित विद्या बहु जानै धर-धर उन्हकी मानिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	नाम गनेश भेष बहु जानै आने गनि गनि बानिउ रे जी।	सतनाम	निति उठि गुदरी अग्यान के लावै भावै बहुत हितकारिउ रे जी।	सतनाम	देवी मानि बहुत वह करई पूजे अक्षत पानिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	आपुन खाय मना नाहिं करई जिव सभ धरि-धरि मारेउ रे जी।	सतनाम	चारि जुग इन्ह पूजा लीन्हों दीन्हों इच्छय जानिउ रे जी।	सतनाम	ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा कीन्हों जोति कर सेवउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	आदि जोति है अंत जोति है जोति सकल जग सोऊ रे जी।	सतनाम	इहां है दक्षिणी जोति परगासी जासु असुर सभ भज्यो रे जी।	सतनाम	<b>दरिया वचन</b>	
सतनाम	तब हम कहा पुर्खा है आदी यह तब लंउड़ी चेरिउ रे जी।	सतनाम	पथल गढ़ि-गढ़ि मुरति बनाया आदि केहू नाहिं पाएउ रे जी।	सतनाम	<b>गणेश वचन</b>	
सतनाम	तब उन्हि कहा ऐसन जनि कहहू, गहहू चरन लपटानेउ रे जी।	सतनाम	तब हम कहा मुरति है पथल चाहो तो फोरि पेवारेउ रे जी।	सतनाम	हाथ पांव मुखा सभो बनाया बोलता बिना नकारेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	ऐसन वचन कोहि करि डरिहै आंखि दिहै दुनो फोरिउ रे जी।	सतनाम	जाहु जाहु अब किछु जनि कहहू नगर रहबि जो चहहू रे जी।	सतनाम		
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			दरिया वचन			
सतनाम	केकर	नगर	डगर	हउए	केकर	केकर
सतनाम	जीव	हौए	जानहु	रे	जी।	
सतनाम	अपने	अंधा	आगु	न	सूझो	बांधिउ
सतनाम	मारिउ	मांहिउ	रे	जी।		
सतनाम	तब	उन्हि	त्राहि-त्राहि	करि	उठै	है
सतनाम	मलेछ	दे	गारिउ	रे	जी।	
सतनाम	सोई	मलेछ	जो	दरद	ना	जाने
सतनाम	आनक	जीव	धरि	मारिउ	रे	जी।
सतनाम	तब	ऐसन	मत	दिल	में	आना
सतनाम	इन्ह	कर	मरदेउ	मानउ	रे	जी।
सतनाम	अहै	देवि	वहि	कहि-कहि	गावै	ले
सतनाम	आवों	तेहि	उखारिउ	रे	जी।	
सतनाम	अर्ध	राति	औ	सावन	दिन	है
सतनाम	अधिक	है	अंधियारिउ	रे	जी।	
सतनाम	ब्राह्मण	एक	बीरबल	है	नाऊं	बसै
सतनाम	एकाठा	गांवउं	रे	जी।		
सतनाम	करे	प्रीति	चरनन्हि	के	जानै	माने
सतनाम	हकुम	जोगाएउ	रे	जी।		
सतनाम	प्रेम	दास	आस	सतगुरु	की	धरि
सतनाम	गठिया	दीन्हो	आनिउ	रे	जी।	
सतनाम	बीरबल	दास	प्रेम	कै	लीन्हों	हरजी
सतनाम	कांध	कुदारिउ	रे	जी।		
सतनाम	डेढ़	कोस	पर	है	वह	मूरति
सतनाम	तहवां	सुरति	पगु	ढारेउ	रे	जी।
सतनाम	भय-भय	राति	भयंकर	भारी	डारिउ	बन
सतनाम	तहां	भारिउ	रे	जी।		
सतनाम	गए	भुलाए	महा	अंधियारी	तहां	कोई
सतनाम	कीन्ह	अंजोरिउ	रे	जी।		
सतनाम	तब	मैं	मूरति	जाए	हिलाया	पाया
सतनाम	जेहि	करि	सुरति	रे	जी।	
सतनाम	लीन्ह	उखारि	दीन्ह	सभन्हि	कहं	है
सतनाम	वह	आदि	भवानिउ	रे	जी।	
सतनाम	बोली	न	चाली	कहा	नहिं	किछुवो
सतनाम	छूँछ	पथल	हम	जानिउ	रे	जी।
सतनाम	तोपि	दीन्ह	ओहि	ओही	ठाऊं	गांव
सतनाम	कोई	नहिं	जानेउ	रे	जी।	
सतनाम	होत	प्रात	ब्राह्मण	तहां	आए	धाए
सतनाम	धाए	कीन्ह	पुकारिउ	रे	जी।	
सतनाम	उजही	भवानी	कहां	चलि	गइली	भइली
सतनाम	आजु	उजारेउ	रे	जी।		
सतनाम	गांव-गांव	सभ	सोर	जुटि	गौ	उठि
सतनाम	गइलि	आदि	भवानिउ	रे	जी।	
सतनाम	डाटि	डाटि	सभ	विप्र	से	कहहीं
सतनाम	तुम्ह	सभ	बात	बिगारिउ	रे	जी।
सतनाम	तरिवन	गहना	नथिया	छोरहु	दिन-दनि	पाप
सतनाम	अधिकारिउ	रे	जी।			
सतनाम	भयो	अचंभौ	ऐसन	संभव	बुधि	बल
सतनाम	गयो	सभ	हारिउ	रे	जी।	
सतनाम	खोजि	ब्रिंद्रा	वासनि	पटनी	देवी	यह
सतनाम	वह	दहिनी	लंगारिउ	रे	जी।	
सतनाम	सभ	मिलि	आनि	आनि	के	कहते
सतनाम	करि	अपमान	बिगारिउ	रे	जी।	
सतनाम	छुआछूत	तुम	सभ	मिलि	कीन्हो	दीन्हो
सतनाम	अवगुण	डारिउ	रे	जी।		
सतनाम	उजहिं	भवानी	कहां	कै	गइली	अइलिहि
सतनाम	नाहिं	दुख	भारिउ	रे	जी।	
सतनाम	धुनि-धुनि	सिर	विप्र	सभ	रोवहिं	रोहविं
सतनाम	नर	और	नारिउ	रे	जी।	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कोई कहै सर्ग कहं गइलिहि भुइं फोरि गइलि पतालेउ रे जी।	तब उन्हि खोजि खादि कै देखा देखाहिं छेव कुदारिउ रे जी।	तूटे फूटे पथल सभ देखाहीं केह के जुधि भौ भारिउ रे जी।	ऐसन जग में को यह जन्मा जो जीतै आदि भवानिउ रे जी।	हारि-हारि थाकि के बैठे कर्म फुटलि हमारिउ रे जी।	पांवो पूजा लरिका जिआवो अब भइलो आजु भिखारिउ रे जी।	लरिका रोवहिं झुंडी करि करि मुंडी खांसी कहां पाइबि रे जी।
निति उठि सब मिलि करहीं आसा मास तीन बिति गएऊ रे जी।	छत्री एक बली है नाऊं बसे तीनि कोस गांवउं रे जी।	आवै हम से प्रीति लगावै बहुत चरन रत मानेउ रे जी।	अब हम मूरति आनि उखारिहो धरिहो इहवां आनिउ रे जी।	तब उन्हि वचन जानि के पायो गांवे निश्चय जानिउ रे जी।	आवत जात डगर में ब्राह्मण झंखि झंखि करहिं पुकरिउ रे जी।	बैठि गए तहां दुर्म की छाया तुह महामाया कहवा पाएउ रे जी।
पथल बोलै नाहिं यह चलई कोइ ले गइले उखारिउ रे जी।	अतना वचन सुनि उठि धाए आएउ पांव सिर डारेउ रे जी।	धन्य-धन्य तुम पिता हमारा जनम नीख नाहिं टारिउ रे जी।	कहु वह गांव ठांव वह नाऊं जीव देउ बलि जाएउ रे जी।	अब मोर धन मोर दीन्हों जियका बलि-बलि तुम्ह बलि जाएउ रे जी।	ऐसन जग में को बलिवंडा चंडि खांडि करि डारेउ रे जी।	एक-एक जग में बड़ बलिवंडा तिन्ह के सिर धरि खांडेउ रे जी।
सत जुग त्रेता द्वापर बीतेव जीतवे कोई नाहिं जानेउ रे जी।	अब तुम्ह कहहु कवन है जाती बह विधि करेउ निपातिउ रे जी।	करो सोंगंध सांच जानि के बोटिन्ह मांस कटावहु रे जी।	अतना सुनि क्रोध सभ कीन्हों दीन्हों बहु विधि गारिए रे जी।	काहे न शोर कीन्ह तेहि दिनवा जेहि दिन्ह उन्हि फोरि डारेउ रे जी।	ऐसन जोर भोर भव हारी तेहि कह कवन पछारिउ रे जी।	पांच सात मिलि तेहि पछारेव आपन लाद देउ मारिउ रे जी।
तब उन्हि कहा छोड़ि दे मोही तोहि तब भेद बताएउ रे जी।	सतगुरु द्रोह जानि मै कीन्हेउ दीन्हें जन्म खुआरिउ रे जी।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक अंसा कोइ कीन्ह विधंसा मूरति तोरि फोरि डारेउ रे जी।	जतनी मूरति अहै जब्त मै ततनी देखि संकानेउ रे जी।	यह तो मूरति किछु नाहिं बोलै बोलता जीव काहे मारिउ रे जी।	पीरु दरजी धरकंधा के बासी तेहि घर जनम उदासिउ रे जी।	अहै अंसक संक किछु नाहीं अंस कहै किछु जानहु रे जी।	सभ मिलि कहे सोर जनि करहू घेरि पकरि तेहि आनिउ रे जी।	आनि परे चहुं ओर से घेरि के नगर भौ अग्यानिउ रे जी।
धै लेइ चलहिं तुम मूरति देखावहु तब तोर जिव नहिं मारिउ रे जी।	गांव मोकदम जानि बोलाई आनि बइठु मोर भाइउ रे जी।	काहे कहै ऐसन कीन्हों नासा फांस आपन गरे लाइउ रे जी।	केते साधु भए जग मांही कंहिं मूरति नहिं आनिउ रे जी।	सुपच नाम जोलाहा कबीरा जग में साधु बड़ भारिउ रे जी।	उन्हिं नहिं कतहीं मूरति उखारी केहु नहिं दीन्हो गारिउ रे जी।	एक-एक भक्त कीन्ह जग सुमिरन जग में भए बड़ ग्यानिउ रे जी।
कैसे तुम्ह अपने म्रितु आनी कुंभज सोखेव पानिउ रे जी।	ऐसन प्रभुता कोई नहिं कीन्हा हीना कुल नहिं जानिउ रे जी।	जाके जग सब सीस नवाए गावहिं देवता बानिउ रे जी।	मारकंडे जिन्हि दुर्गा बरनी धर-धर अहै दुःखा हरनिउ रे जी।	महामाया है जखानी देवी तेहि तुम कीन्ह उछेदिउ रे जी।	देहु मूरत अबहूँ जनि भूलहु कोई नहिं संग सहाइउ रे जी।	करहु करार सांच जानि के जीव जनि हतहु पराइउ रे जी।
कीन्ह करार दीन्ह लीखि के सत्त वचन नहिं टारिउ रे जी।	जो तुम्ह कहो सोई सभ करिहों मरिहों जिव नहिं जानिउ रे जी।	पान फूल लेइ हम यह पूजब बुझब तुअ हितकारिउ रे जी।	अतना वचन सभै मिलि कहिया गवहिया तुम सभ जानहु रे जी।	दीन्ह देखाय जहाँ रहि गाड़ी खोदि लेहु तुम ठादिउ रे जी।	खोदि लीन् यह बहुत दिन होए खोय दीन्ह यह जातिउ रे जी।	नाक फोरि तोरि के डरिया अवरि भयो यह भारिउ रे जी।
जहां ले नगर आए सभ जाती हाय-हाय पिटु सभ छातिउ रे जी।	अइसन जग में कहीं न सूना जेहि सूझै पाप न पुन्यउ रे जी।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अइसन मूरति महा है सिद्धि तेहि इन्हिं कीन्ह नखीधिउ रे जी।	विप्र कहा अबहीं जनि बोलहु डोलहु धर-धर जानिउ रे जी।	लीन्ह उठाए खाट के ऊपर सूपद सभ मिलि देखहु रे जी।	सभ मिलि नगर एक मत बाटी धोए देहु सभ माटिउ रे जी।	लेइ जाए तुम सभ मिलि रोपहु कोपि मोकदम कहि बानिउ रे जी।	रोपि मूरति तहां बहु विधि आनी दरिअहिं बलि लेइ दीन्हों रे जी।	तीनि मास देवी भइ भूखी भूख जाए तेहि आनहु रे जी।
रोपि मूरति तहां आनेउ जानी अस्तुति बहुविधि ठानिउ रे जी।	महामाया कै ओद्र बिदारेव जाति कवन बड़ जानिउ रे जी।	महिखासुर के जानि पछारेव गहेव तेग करि आनिउ रे जी।	अज्या सुत के मारि विधंसेव सिंध चझल हर्खानिउ रे जी।	अब तुम प्रभुता काहे न कीन्हा दीन्हो कील पछारिउ रे जी।	नाक फोरि तोरि के दीन्हा दीन्हेउ सीस उतारिउ रे जी।	जागु जागु या जागु महाबलि अली काहे यह खोवहु रे जी।
हुकुम देहु हम सभ मिलि जाईं उन्हिं के धइ ले आइउ रे जी।	चलहु सभी मिलि वोए धरि लीन्ही छत्री होए बलि दीहों रे जी।	मारु मारु कै विप्र सभ धाए भवानी बलि दीन्हेंउ रे जी।	कहे मोकदम हम नहिं जानी जेकर हुकुम न मानिउ रे जी।	उन्हकर कोइ नाहिं करिहै गोहारी सभ के दिहैं जोहारिउ रे जी।	तुम्ह भ पढ़ै पुरान की नेती उन्ह भ दीन्ह अनेतिउ रे जी।	आनि परेव जहां नगर बसेरा घरेव धर तहां जानिउ रे जी।
हम रहे पोखारा पर इमि जंहवां तंहवां आनि पुकारिउ रे जी।	आनि परे चहुं ओर से घेरि के पकरि के तोहि बलि दीहों रे जी।	तब मै कहा चलहु तुम मरिहहुं महिहहुं जाए पतालेउ रे जी।	उठि-उठि नगर सभै मिलि धाए आए छोटा बड़झारिउ रे जी।	ठाढ़ भन्हि मिलि देखु तमासा साथ केहु जनि देहहु रे जी।	ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र है सभ मिलि सुनहु बिचारिउ रे जी।	जैसे विप्र जानि यहि धरिहै करिहहु केउ ना गोहारिउ रे जी।
एक से एक नगर सब ठाढ़ेव बाट रहे सभ रोकिउ रे जी।	मात-पिता मिलि रोवहिं दुखारी हारि जानि बलि दीहहिं रे जी॥					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तेग	बहादुर	भाई	भातीजै	तेग	गहो	रन मंडेव रे जी।
अब	मोर	साहब	के कवन	दुखैहैं	साहब	जोर सिर खांडेउ रे जी।
भीखम	खांव	औ	दुंद	खांव	मिलि	तइअब आनि पुकारिउ रे जी।
दलन	अजीज	चंदन	तहां	आए	दलुआ	फेकन पुकारिव रे जी।
होहु	तेआर	जुझहु	रन	आजू	काज	किछु नहिं आइउ रे जी।
ककुआ	तोहार	विप्र	सभ	धरिआ	करिआ	कोइ न गोहारिउ रे जी।
सेली	गहो	अब	झपटि	सांग	ले	तड़पि चलेव सभ झारिउ रे जी।
ठटेव	लोग	सभ	हटेव	देखि	के दस	बीस सिर धरि काटेव रे जी।
सभ	के तन	अति	रोस	जो	बाढ़ेव	कटेउ मै रि जानेउ रे जी।
हंक	देत	तहां	संक	परिगौ	भयो	भय सभै पराएउ रे जी।
सूर	के मुखा	पर	नूर	झरतु	है	फूर जानहु यह भाइउ रे जी।
तेग	झमंकत	कहि	कहि	हंकत	ठाढ़	होहु मेरो भाइउ रे जी।
सेली	देखात	सभ	चलेउ	पराइ	आइ	केहु नाहिं आपउ रे जी।
काहा	साहेब	जनि	जीव	मारहु	ठाढ़	होहु तुम आएऊ रे जी।
सभ	मिलि	कहा	तुरंत	घर	चलिहो	हलिहों दुरजन भारिउ रे जी।
हम	हैं	सुक्रित	अंस	पुर्खा	के कंसहिं	लीन्हे जीतिउ रे जी।
लीन्ह	लिआए	चलै	अब	तहवां	जहवां	मंदिलसारिउ रे जी।
मात-पिता	मिलि	सभ	देह	पोछहीं	पुछि-पुछि	आंसु ढारिउ रे जी।
कवन	काल	यह	आनि	बेसाहेव	काहे	घर में डारि आनिउ रे जी।
ठाकुर	द्रोह	गांव	कर	लोगवा	सोग	भयो मोहि भारिउ रे जी।
तब	हम	कहा	सुनो	रे	माता	गात देखेव तुम्ह आइउ रे जी।
सतपुर्खा	के	अंस	हम	अएऊ	अमरापुर	है गांवउ रे जी।
अब	तो	जनम	तोहरे	घर	भरिहों	हलिहों दुरजन भारिउ रे जी।
डरे	डेराय	जिव	कबहिं	न	डरिए	गहिए नाम सहाइउ रे जी।
यह	जग	आए	जीव	सभ	तरिहों	डलिहों शबद निसानिउ रे जी।
जब	हम	जनम	तोहरे	घर	अएऊ	जिंदा दरसन दिएउ रे जी।
मातु-पिता	तुम्हे	दरसन	दिएऊ	नाम	हमारा	कह दिएऊ रे जी।
वोए	जिंदा	है	सदा	सहाई	गर्ब	भंजन अघ मोचन रे जी।
तुम्ह	जनि	रहो	अब	इमि	डेराई	धरिहि जिव आइउ रे जी।
सांझ	भयो	तब	नगर	जमा	भयो	मंत्र कीन्ह भ जानिउ रे जी।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
आनि बोलाए सभन्हिं के बांधी डंड करी किछु जानिउ रे जी।	आया दूत कहन तब लागा तुम्हें बोलावन आएउ रे जी।	संकरवार और गांव कर लोगवा सोग भयो तेहि भारिउ रे जी।	महामाया है जखानी देवी चारिउ जुग कै थातिउ रे जी।	सो उन्हिं ऐसा क्रीत विधांसा उन्ह कर करिए नासिउ रे जी।	मम तब कहा अस सुनिके पावा तुरतहिं कीन्ह पयोनेउ रे जी।	देखि मोकदम बहुविधि कोपेव रोपेव झगरा भारिउ रे जी।
कहे मोकदम काहे फोरि डारेव तोहर गतर तोरि डारेउ रे जी।	तब हम कहा तोर कवन मुरति है साधुन्ह के वह दासिउ रे जी।	तब उन्हि हाथ खरग पर दीन्हो करिहों तुव जिव हानिउ रे जी।	जब उन्हि खरगिह जानि उखारेव चलेवो सन्मुख जानिउ रे जी।	तब एक ऐसा भयो अचंभव सिंध ठनिक ठहरानेक रे जी।	थर थर गढ़ सभ कंपित भएऊ भएउ त्रास सभ जानिउ रे जी।	त्रासे सभकर बदन सुखानेव भागेव जहां तहां जानिउ रे जी।
तब हम आनि तखत पर बैठे हारि रहै जढ़ जानिउ रे जी।	किछु दिन बीतै सैल कहं निकले सुरति उदास भयो जानि रे जी।	गए रहै गंगा के तिरवा नावं बहादुरपुर जानिउ रे जी।	सकरवार तहां रहे निहाल सिंध साहब जानि वोए पहुंचेव रे जी।	थए बनाए गढ़ में तहां टीकेव गनेस पंडित गए आनेउ रे जी।	देखि दरस बहु गदगद हंसेब भगत बड़ा इन्हिं जानिउ रे जी।	
दरिया वचन						
बड़ा कोई जेहि साहब नेवाजहिं सत्तापुर्ष कहं जानिउ रे जी।	गणेश पंडित वचन					
सत्तापुर्ष है राम गोसाईं और मिथा सभ जानिउ रे जी।	दरिया वचन					
मिथा मिथा जनि करहू पंडित हुकुमहिं जल थल जानिउ रे जी।	पंडित पढ़ि-पढ़ि वेद विचारहिं रहनि गहनि है भारिउ रे जी।					
गणेश वचन						
तोहरी रहनि कैसे लखि आवै जम्भ भयो एक ठाएउं रे जी।	सुरसरि कलि में पापहिं धोवै कलि में नर्क उधारेउ रे जी।					
7						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			दरिया वचन			
सतनाम	आय बैठे जहां सुरसरि तिरवां ताहां किछु सबद उचारिउ रे जी।	सतनाम	चलत फिरत ताहां पंडित आए बैठि गए ताहां जाइए रे जी।	सतनाम		
			गणेश वचन			
सतनाम	का तुम आसन कसि के बैठे हाथ किछु नाहिं देखाउ रे जी।	सतनाम	जो इहां गंगहिं आनि बोलावहु तब सत्य किछु जानिउ रे जी।	सतनाम		
	गंगा जग मे अहै सारथी सभ मिलि जाएउ रे जी।					
सतनाम		सतनाम	दरिया वचन	सतनाम		
	जल थल सभ है हुकुम साहेब का हुकुम होए ताहां धाएउ रे जी।					
			गणेश वचन			
सतनाम	अतना सुनके नगर सिधारेव कहवे लोगहिं से जाएउ रे जी।	सतनाम	दरिया दास गंगा तिर बैठे गंगा चरनन्हिं दासिउ रे जी।	सतनाम		
	गंगा आए चरन को छुइहैं तब उठबों जिव जानिउ रे जी।					
सतनाम	साहब कहां मिथ्या इन्हिं कहिया संकरवार यह जानिउ रे जी।	सतनाम	काहा संदेश भोस एक धरिकै तुम जनि उठहू जानिउ रे जी।	सतनाम		
	होत प्रात तहां हाहाकार भयो लहरि उठेव एक जानिउ रे जी।					
सतनाम	गुमज एक जल बहु सोमा चलेव शुभ ज्यों जनिहउ रे जी।	सतनाम	आए जल सभ आसन भी जेव जानि चरन लपटानिउ रे जी।	सतनाम		
	हाहाकार सुनि नगर ससभ धायो आनि पहुंचेव जानिउ रे जी।					
सतनाम	तब ले लहरि गंगा समानेव उलटि गंगा बिच जानिउ रे जी।	सतनाम	धाए पहुंचै गांव मोकदम दृष्टि परा तिन्ह जानिउ रे जी।	सतनाम		
	देखा गंगा जल थै सभ भींजा लहरि फिरा उन्हिं जानिउ रे जी।					
सतनाम	नाए माथ ताहां कोरनिस कीन्हों लीन्हो सिफित बखानिउ रे जी।	सतनाम	धन्य वोए ठांव नगर जहां जन्मा कुल भ कीन्ह उजियारिउ रे जी।	सतनाम		
	हम नर प्रानी बहुत भुलानेव अब चिन्हा गति पाइउ रे जी।					
सतनाम	हौ तुम्ह पुर्खा अंस अवतारा तरिहो जग जिव जानिउ रे जी।	सतनाम	अब मोरे दिल निश्चय भयऊ हुकुम रखो जिव जानिउ रे जी।	सतनाम		
	हम तौ जाना जक्त जैसे भक्ता अब जाना जैसे कुम्हज रे जी।					
सतनाम	ऐसे मुनि भ भए जक्त मैं उन्हिं समान ना जानेउ रे जी।	सतनाम	अब मोर मन निश्चय पतिआनेव जानेव अबिगति बानिउ रे जी।	सतनाम		
सतनाम		सतनाम		सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	उहां से उठी तख्त पर आए धाए जीव सभ जानिउ रे जी।	सतनाम	इहवां आए सुरति बहु कीन्हों भीन्हेउ आदि सहिदानिउ रे जी।	सतनाम	कैसे अदल चलहिं संसारा कैसे जीव उबारेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	जेठ असाढ़ सावन भादो बिति गएऊ कुआर मास चलि आएउ रे जी।	सतनाम	जिंदा अगम रूप चलि आएउ ठाढ़ भाए जाए द्वारेउ रे जी।	सतनाम	मम दासी यह सेवा आनेउ एक भक्ति दिल ठानेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	आवै भोखा बैरागी जाहां लै तेकर पांव पखारेउ रे जी।	सतनाम	पांव पखारि चरन जिव आनी चरनामृत लीनेउ रे जी।	सतनाम	आगे बहुत दिन भक्ति इहां ठाना जानि पांव धोय लीन्हउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	आए द्वारे ठाढ़ जो भाएऊ दरसन आगे किएऊ रे जी।	सतनाम	दरसन करि दाया बहु मांगा थै पर आनि टिकाएउ रे जी।	सतनाम	सादर करि आदर बहु कीन्हा सुरति अनूप तहां देखेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	ठाढ़ा आगे पांव पखारा चरना आम्रित लीन्हेउ रे जी।	सतनाम	चरना लेइ आम्रित सम जाना आना सुरत बिचारेउ रे जी।	सतनाम	साहब कहा पुर्खा कोइ ऐहैं कहिहैं अदल सम्हारिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	सो सुनि चेत दासी मम रहेऊ गहेऊ सुरति विचारेउ रे जी।	सतनाम	मम इमि रहा पोखरा के ऊपर तहवां बात जनाएउ रे जी।	सतनाम	चलो तुरन्त दरसन अब करिए धरिए चरन पखारिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	चले तुरंत तब थै पर आए धाए चरन लपटानेउ रे जी।	सतनाम	काहां ले भाग कहा नहीं जाई पाइल मुकुति भलाइउ रे जी।	सतनाम	साहब कहा सुनहु हो दरिया भक्ति ग्यान दुनो जानेउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	माया भक्ति ग्यान दुइ जानी आनी वचन बखानिउ रे जी।	सतनाम	माया भक्ति तब देहु सभै तुम्हें जो चाहहु जिव आनिउ रे जी।	सतनाम	लेहु माया तब देहु सभै तुम्हें जो चाहहु जिव आनिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	धोड़ा हाथी दरब खजाना चाहहु तौ तुम्हं देअउं रे जी।	सतनाम	एहि में ग्यान समतूल ना रहिहै काल संधि तेहि जानहु रे जी।	सतनाम	हर बैल का संग्रह ना करिए जिंदा नाम बिचारिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	निरमल होए मल कबहिं न करिए धरिए ततु बिचारिउ रे जी।	सतनाम	सिर खुला कंवल तेहि फूला भान कला छवि छाएउ रे जी।	सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जैसे चंद चकोरहिं प्रीति करि रीति कबहिं नहिं छूटेव रे जी।	बिआज बटा नहिं लेना देना है डेढ़ा सवाई ना कीजिए रे जी।	जीव कंह पीरा जानि नहिं दीजै लदनी सब दुरि कीजेउ रे जी।	निरमल दशा हंस भौ तबहीं कबहीं गर्भ नहिं बासेव रे जी।	सिर खुला का एही रहनि है गहनी सुरति गहि सांचेउ रे जी।	दफा गिरहस्त जानि चलाया आए जगत में जानिउ रे जी।	गिरहस्त फकीर रहनि कै दीन्हा दूनो जानि बिलगाएउ रे जी।
गिरहस्त माया में शामिल रहिया कहिया भक्ति विचारेउ रे जी।	भक्ति माया किछु नाहीं अंतर जंतर राखि उबारेउ रे जी।	अंतर पुर्खा भक्ति जो जानी मानहु नदि हजूरिउ रे जी।	सुत कलंतर सभै वह चहिए गहिए सतगुरु बानिउ रे जी।	सबद हमारा नहिं कोइ मनिहै काल मुख जिव जाइउ रे जी।	जाति पाति कुल देह कर नाता या में मति केउ भूलहु रे जी।	भरम करम तजि सतगुरु आसा एक तत्तु चित जानहु रे जी।
नहिं कोइ आन सभै महं आपै हिंदु तुरुक जनि आनहु रे जी।	दया दर्द बसे जेहि अंदर तासो भर्म न आनेउ रे जी।	अन पानी सभ सकल हमारा जो लावे सो डारहु रे जी।	मति कोइ भर्म राखे दिल माहीं मुकुति उभय जौ चाहहु रे जी।	जो कोई भर्म करे जिव देखी चौरासी सोइ जाइउ रे जी।	ताल म्रिदंग समाज न एको पान अफीम मति खावहु रे जी।	निसा हराम जहां लगि देखौ ताके संग मति आनहु रे जी।
सुर्ख सिआह औ जद रंगीन है ई सभ काल के छाहिहु रे जी।	पथल पानी मुरति और पूजा ई सभ भर्म करि जानहु रे जी।	देवल देवी देउकुरा पुजावै नाना पूजा अरुझाएउ रे जी।	कबुर पूजा महजीद बंग है तज्या बहुत बनाएउ रे जी।	नाहिं किछु सुनै नाहिं किछु बोलै मंकर केव अरुझानेउ रे जी।	मकर बंदगी केव कर करना असल अमान तोहि पासेउ रे जी।	दुनों दीन में खालल परा है मारिकीस कुफरानेउ रे जी।
दुनों दीन के एकै मिलावै कुदरति आपु बनाएउ रे जी।	एकै दिन राति है एकै एकै पवनेउ पानिउ रे जी।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक	हृद	आसमान	है	एकै	जल	थल
एके	आदम	सकल	बिराजै	एके	रूधिर	वो
एके	अस्ति	मेद	है	एके	तचा	तीनउ
एके	रंग	सकल	सभ	देखो	एके	आतम
एके	काम	क्रोध	है	एके	एके	लोभ
एके	भाव	प्रेम	एक	बानी	सकल	में
एके	माटी	नाना	विधि	बासन	एके	सिरजनिहारहु
एहि	रहनी	साहब	कहि	दीन्हेउ	सुनहु	फकर
साह	फकर	सुनु	बचन	हमारा	जिंदा	पद
साहिजादा	तुम	सही	हमारा	बचन	रेखा	तुम्ह
वचन	हमार	टरै	नहिं	टरई	टारे	काल
सकल	दफा	जो	होए	हमारा	तासो	करेउ
फकर	साहिब	बस्ती	है	दासा	यह	फरजंद
इन्ह	औलादि	अंस	करि	थापा	ताकर	हुकुम
हुकुम	जोगाए	अदब	से	रहिए	चलिए	पंथ
मनसफ	सत	जानि	के	दीन्हो	झूठ	मती
छापा	हमारि	सांच	करि	जानो	जनि	करिअहु
सत	तौ	जिंदा	सुक्रित	सीढ़ी	है	हम
साहि	फकर	बस्ती	गुनदासा	यह	सभ	सीढ़ी
इन्हि	जाके	सहिजादा	थपिहैं	सोउ	सीढ़ी	कहाएउ
ऐसे	चलिहै	सीढ़ी	हमारा।	सुनहु	दफा	यह
दफा	हमार	सत	शब्द	जो	मानै	सो
हुकुम	हमार	सतकै	माने	लोक	पआना	जिव
वचन	हमार	नाहिं	जो	मनिहै	अंतकाल	पछताइउ
पछा	पछी	करि	जो	जिव	भुलिहै	देह
सो	जिव	जैहैं	जमके	मुखा	में	कल्प
जो	कोई	मानै	शब्द	हमारा	ताके	लेइ
तख्त	रोपि	इहां	तुम्हं	राखों	चलिहै	सत्ता
जो	कोइ	दाफा	अहै	हमारा	तख्त	कबै

11

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक	हृद	आसमान	है	एकै	जल	थल
एके	आदम	सकल	बिराजै	एके	रूधिर	वो
एके	अस्ति	मेद	है	एके	तचा	तीनउ
एके	रंग	सकल	सभ	देखो	एके	आतम
एके	काम	क्रोध	है	एके	एके	लोभ
एके	भाव	प्रेम	एक	बानी	सकल	में
एके	माटी	नाना	विधि	बासन	एके	सिरजनिहारहु
एहि	रहनी	साहब	कहि	दीन्हेउ	सुनहु	फकर
साह	फकर	सुनु	बचन	हमारा	जिंदा	पद
साहिजादा	तुम	सही	हमारा	बचन	रेखा	तुम्ह
वचन	हमार	टरै	नहिं	टरई	टारे	काल
सकल	दफा	जो	होए	हमारा	तासो	करेउ
फकर	साहिब	बस्ती	है	दासा	यह	फरजंद
इन्ह	औलादि	अंस	करि	थापा	ताकर	हुकुम
हुकुम	जोगाए	अदब	से	रहिए	चलिए	पंथ
मनसफ	सत	जानि	के	दीन्हो	झूठ	मती
छापा	हमारि	सांच	करि	जानो	जनि	करिअहु
सत	तौ	जिंदा	सुक्रित	सीढ़ी	है	हम
साहि	फकर	बस्ती	गुनदासा	यह	सभ	सीढ़ी
इन्हि	जाके	सहिजादा	थपिहैं	सोउ	सीढ़ी	कहाएउ
ऐसे	चलिहै	सीढ़ी	हमारा।	सुनहु	दफा	यह
दफा	हमार	सत	शब्द	जो	मानै	सो
हुकुम	हमार	सतकै	माने	लोक	पआना	जिव
वचन	हमार	नाहिं	जो	मनिहै	अंतकाल	पछताइउ
पछा	पछी	करि	जो	जिव	भुलिहै	देह
सो	जिव	जैहैं	जमके	मुखा	में	कल्प
जो	कोई	मानै	शब्द	हमारा	ताके	लेइ
तख्त	रोपि	इहां	तुम्हं	राखों	चलिहै	सत्ता
जो	कोइ	दाफा	अहै	हमारा	तख्त	कबै

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जिंदा तख्त कीन्ह बकसिस मोहि जिंदा हुकुम जोगावहु रे जी।	जिंदा हुकुम याहिजादहिं भयऊ तब मैं शब्द पुकारिउ रे जी।	गिरहस्त फकीर जो दफा हमारा तख्त हुकुम तुम राखहु रे जी।	बरस दिन पर दरसन करिहो जो कोई बाहर होखाहु रे जी।	तख्त पर आनि परसाद चढ़ावै सदा सुखी मन सेतेउ रे जी।	फकीर मकान बांधि जौं बैठे तख्त परसाद चढ़ावहु रे जी।	दफा हमार सत्त जो जानै माने शब्द हमारेउ रे जी।
साहिजादा के हुकुम जोगावै सो हंसा भव पारेउ रे जी।	कहे फकर सुनु साहब मोरा हमके लेइ उबारेउ रे जी।	कब लगि अदल चलै जग माहीं सो निजु वचन सुनावहु रे जी।	काल प्रबल अति दारुन जग में घट-घट खेलत दारुन रे जी।	मान मरजाद जग सभ कहं देखत मान छोड़ा नहिं जाइउ रे जी।	यह कलि लोगबहुत चतुराई शब्द कोई नहिं मानिउ रे जी।	दया तुम्हारि तबहीं बनि आवत तबहीं हंस उबारिउ रे जी।
साह फकर सुनु चित दै नीके कहेउ तोहे समुझाइउ रे जी।	तुम पूछा अदल की बातें सोई भेद तोहि भाखोव रे जी।	जब लगि शब्द रहै एक मंता तब लगि अदल चलाइउ रे जी।	भर्म कर्म नहिं होय अदल में रहै अदंग अमानहु रे जी।	ताल मृदंग समाज बनइहैं रखना बर्तन छोड़ दीहहु रे जी।	जाति-पांति कर करिहैं बिनाई भर्म काल घट छाइउ रे जी।	नाना कर्म करत जग हीं सभ सो अकर्म अकर्म सब जानेउ रे जी।
भोखा कर्म में मिलि जब जइहै बिलगिहि शब्द हमारह रे जी।	अंस हमार उठि कै जइहै काल मुखा जिव जाइउ रे जी।	तब मम फिरिकै या जग ऐहों करिहो शब्द पुकारिउ रे जी।	करी पुकार अदल फेरि रोपो हंस मकताए लेइ जाहंहिं रे जी।	यही कारखाना अहै हमारा एक सनवात एक सीकाउ रे जी।	जुगन्हजुगन्ह से हम चलि आएउ सार शब्द गोहराएउ रे जी।	प्रथमे सुक्रित नाम धराएउ हंस मुकुताए लेइ जावहिं रे जी।
फेरि दूजै जब जग में आएउ जोग संताएन नाम धराएउ रे जी।	तीजै नाम मुनींदर कहेऊ हंसन्हिं बंद छोड़ाएउ रे जी।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पुनि आएहु म्रितु मंडल माहीं करुनामे निजु जानिउ रे जी ।	हंसन्हि बांधि बंदीखान छोड़ाएहु पंडों जग घंट बाजेव रे जी ।	नामदेव रुप हमहिं कहाएउ लोमस समाधि जोग साधिउ रे जी ।	दुई बार सुलतानहीं कहिया गुप्त रहेड जग जानिउ रे जी ।	अगस्त रुप हमहिं चलि आएउ सागर जल गंडु का राखेउ रे जी ।	गडुका छोड़ि बाहर बाहर जब डारेव सागर जल प्रगटानेव रे जी ।	बलिभद्र नाम हमहिं कहं कहिए हल मूल हथिआरेउ रे जी ।
सेस रुप हमहिं होए रहिआ लखन कछू इमि मानिउ रे जी ।	कलउ कबीर होए कासी आए कीन्हों सबद पुकारिउ रे जी ।	सुनि कै काल करसि कर जागा कसनि बहत्तर जानिउ रे जी ।	मगहर गांव गोरखपुर निकट बिजुली खांव चेताएउ रे जी ।	बीरसिंध राए बघेल चेताएउ दूनो झगरा भारिउ रे जी ।	आए ठाकुर परसोतिमपुर से धाम हमार नाहिं बनेऊ रे जी ।	कोपि के सेंधु लहरि दे मारी धाम बनन नहिं पाएउ रे जी ।
हमसे सेंधु कारन एक भएऊ लंका बारहिं जानिउ रे जी ।	वहि कारन से सेंधु खिसिआनी धाम बनन नहिं पाएहु रे जी ।	हम तुम भाई एक पिता कर तुम्ह देखात दुःख भारिउ रे जी ।	अब तुम चलि के सेंधु हटावो हद देहु तुम बांधेउ रे जी ।	ठाकुर लेइ तुरंत जाइ पहुंचा डाटिउ सेंधु तेहि जानिउ रे जी ।	सेंधु से कहा बचन सत जानी अबरि के बार सोखि डारेउ रे जी ।	हद बांधी तोहि दिहो टेकाना तुम इधर मति आवहु रे जी ।
सेंधु वचन लीन्हों इमि मानी नहिं हम आएव डर खाएबु रे जी ।	दुनो भाई मिलि एक मत ठानेव रोपि सर्व जग तहां जानिउ रे जी ।	तब मम विदा भयो वहीं ठांव से डोलत डोलत चलु देसहिं रे जी ।	मगहर जमा तहां जब करिया वीरसिंध बघेल नहिं देसहिं रे जी ।	बिजुली खांव कबुर ने दीआ वीरसिंध बघेल दल साजेव रे जी ।	कबुर खोदि पुरतग्या लीन्हो नहिं कछु भेंटेव जानिउ रे जी ।	दूनो दल राखि तेहि दीन्हो गुप्त भयो पुनि जानिउ रे जी ।
शब्दहिं रुप रहों जग माहीं देखाओ सभ कहं जानिउ रे जी ।	सिलिमिलि दीप सहतेजी चेताए दीन्ह कंडहारि ताहि जानिउ रे जी ।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	राए बघेल चतुर्भुज सूबा उन्हहु के दीन्ह कंडहारिउ रे जी।	सतनाम	औरहि अवर देस इन्हिं बोधेव जम्बुदीप पुनि आएउ रे जी।	सतनाम	गढ़ बांधे नगर एक रहिया पहुंचेव तहवां जानिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	धर्मदास जेही ग्रिह जन्मा माया बहुत तहां देखेउ रे जी।	सतनाम	धर्मदास अंस है मोरा नाम काल कर राखेव रे जी।	सतनाम	काल फंद अति कठिन कठोरा काल छेकि तेहि डारिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह निबेरा बहुत दिन बीते तब वोए हम कहं मीलेउ रे जी।	सतनाम	मिलु धर्मदास जिव बहुत दुखारी आम्रित ढारि पिलाएउ रे जी।	सतनाम	तब धर्मदास सुरति उजियारा देखो लोक सतझारिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	देखि लोक तब अति हरखाना धन साहब तू मोहि जगाएउ रे जी।	सतनाम	तुब परताप कहा नहिं जाइहिं बड़ा भाग दरसन पाएउ रे जी।	सतनाम	सुनु धर्मदास कहों तोहि बानी गहहू मूल निसानिउ रे जी।	सतनाम
सतनाम	तुम कै देउं कंडहरि जानि कै जीव के तुम्ह निसानिउ रे जी।	सतनाम	धर्मदास पूछे कर जोरी छापा केहि पुकारेउ रे जी।	सतनाम	शब्द पुकारि नाम केहि चलिहै सो निजु भेद बतावहु रे जी।	सतनाम
सतनाम	सुनु धर्मदास कहों सतबानी शब्द तुहूं पुकारेहु रे जी।	सतनाम	छाप कबीर नाम के चलिहै कबीर के पंथा पुकारेहु रे जी।	सतनाम	चलिहै पंथा जगत के माहीं हंस चेताए लोक जावहिं रे जी।	सतनाम
सतनाम	बंस बेआलिस तुम्ह के दीन्हों चलिहै लोक निसानिउ रे जी।	सतनाम	बाजे डंक जम्बु दीप में कांपेव काल इमि जानिउ रे जी।	सतनाम	सुनु धर्मदास कहों एक अगम एक धोखा बंस होइहि रे जी।	सतनाम
सतनाम	निरंजन दूत चारि चलि अइहैं रंभ कुरंभ जै विजय रे जी।	सतनाम	पुर्स समान शब्द पुकरिहै नाम कबीर कहि निसारिउ रे जी।	सतनाम	सुनु धर्मदास देखु चित लाई ऐसन छल जम करिऊ रे जी।	सतनाम
सतनाम	जब लगि तन में तुम रहई तब लगि नहिं प्रगटानेउ रे जी।	सतनाम	जब तुम तन के त्यागन करिहो तब जम आनि प्रगटाइहि रे जी।	सतनाम	बंस तुम्हार मिलिहै वहि संगा असल रहनि छोड़ि जाइहि रे जी।	सतनाम
सतनाम	बिरला जन जो होहि सेआना गहिहैं मूल निसारिउ रे जी।	सतनाम	बिलगहि सत्ता शब्द मम बानी अंस उठी मम जाइहि रे जी।	सतनाम	सुनु धर्मदास तोहिं कहों बुझाई बंसहिं जानि चेतावहु रे जी।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अब मैं तुमसे अंगम होत हौ पंथ चलावहु जानिउ रे जी ।	धर्मदास चरन गहि लागै करहु दया मोहि स्वामिउ रे जी ।	दया तुम्हारी पंथ चलइहौं दया दुष्टि तुम राखाहु रे जी ।	सुनु धर्मदास कहों तोहि जानी वचन रेखा तुम्ह मानहु रे जी ।	जो मम कहा सोई सत होइहैं और वचन मति जानहु रे जी ।	जो कोई गहिहैं शब्द हमारा अइहैं लोक मंझारहु रे जी ।	एक रहनि एक शब्द विचारा एक तत गहि सारहु रे जी ।
एके बिरा अंक है साथा एक सतनाम पुकारहु रे जी ।	अम्रित ब्रीछ पुर्स सतनामा सुत खोडस तिन्ह जानिउ रे जी ।	सुनु धर्मदास वचन सतबानी अब मैं लोक सिधारिउ रे जी ।	रहेउ सो देख अदेख भय गयऊ शब्द सरूप चलि आएहु रे जी ।	बैठि लोक मंझार महं रहिया दृष्टि चहूं दिसि हेरिउ रे जी ।	जहां तहां अदल चलै जग माहीं हंस कंडहार पहुंचावहिं रे जी ।	नव हजार हंस लोक कहं चलिआ बीचहि जम रोकि डारिउ रे जी ।
पाएर दीप ठहर जमथाना तहां हंस रोकानेव रे जी ।	हंस अमरपुर जाने चाहै जम जाने नहिं देइउ रे जी ।	जम कहै नाहिं जाने पावो सनदि हजूरी तोहि नाहिउ रे जी ।	सनदि हमार अहै तोहि पासा तुम केव कर उहां जावहु रे जी ।	जीव अकुलाए कीन्ह पुकारा पुर्खा हुकुम जाए देखाहु रे जी ।	करी सलाम मैं चलेउ तुरंता पहुंचे तेहि ठाइउं रे जी ।	जमही मारि धके दुरि टारेउ हंसै लीन्ह छोड़ाइउ रे जी ।
साहब बलते हंस छोड़ाया काल रहै मुरुझाइउ रे जी ।	हंसहिं लेइके लोक पहुंचाया काल कीन्हा फिरआदउ रे जी ।	पुर्स लीन्ह फिर आदि तेहि जानी कहहु वचन सत जानिउ रे जी ।	निरंजन अरज कीन्ळ सिर नाई देखाहु सुपद बेसुपद रे जी ।	तीनि लोक तुम हम कहं दीन्हा पाछे सझवा कीन्हेउ रे जी ।	कीन्ह करार जोगजीत हमही से पुर्ष सनदि जिव लोकहिं रे जी ।	सो मम वचन मानि कै लीन्हा अब बल दोसर देखाहु रे जी ।
सकल जीव कहं सनदि हमारी तुवं सनदि नाहिं एकउ रे जी ।	तुव सनदि जिव लोकहिं जइहि हमारी सनदि जिव रहिहें रे जी ।					



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कंचा	तन	कर	सनदि	हमारा	तुव	सनदि
अमानहु	रे	जी।				
सुपद	बेसुपद	तुम	यह	देखो	हंस	मोर
देहु	फेरिउ	रे	जी।			
पुर्खा	कहा	सुनहु	तुम	बानी	अब	तुम
केंव	बिलगानेउ	रे	जी।			
तीन	लोक	यह	तुमके	दीनहा	सकल	वस्तु
जत	आनेउ	रे	जी।			
यह	सभ	सकल	हमारो	आही	हम	नाहिं
तुमसे	फेरेउ	रे	जी।			
एता	हंस	सलामी	लीन्ह	अब	तुम	केंव
कर	फेरहु	रे	जी।			
तुरंत	निरंजन	अर्ज	तब	लायो	धन्य	पिता
सुखदाइउ	रे	जी।				
अर्ज	एक	सुनु	पिता	हमारा	अब	अपेल
मति	होखेउ	रे	जी।			
जोगजीत	से	कहहु	बुझाई	हमैं	दुःख	जनि
देवहिं	रे	जी।				
हमैं	दुःख	जानि	के	देवहिं	हमहिं	बैर
फेरि	लेवहिं	रे	जी।			
अबहीं	जोर	हमार	ना	लहिहै	उन्ह	कर
जोर	है	भारिउ	रे	जी।		
कंचा	तन	जब	धरिहै	शरीरा	तब	बल
जोर	हमारहु	रे	जी।			
पुर्खा	कहा	सुनहु	सुत	तुहूं	ऐसन	बुधि
मति	ठानहु	रे	जी।			
आपन	आपन	हुदा	पर	रहिए	उन्हि	दोसर
मति	जानहु	रे	जी।			
सुनु	जोगजीत	बचन	कहों	तोही	जोर	करहु
मति	जानिउ	रे	जी।			
जो	कोई	बूझे	शब्द	हमारा	सनदि	हजूरहिं
आनहु	रे	जी।				
जाहि	सनदि	नहि	होए	हमारा	ताके	मति
तुह	आनहु	रे	जी।			
जोगजीत	बचन	लीन्ह	मानी	बिना	सनदि	नहिं
जानहु	रे	जी।				
सुनहु	निरंजन	कीन्ह	करारा	अब	दोसर	मति
जानहु	रे	जी।				
करी	सलाम	निरंजन	आए	अपने	धाम	बइठेउ
रे	जी।					
किछु	दिन	बीते	पुर्खा	तब	कहेऊ	जम्बूदीप
पगु	ढारहु	रे	जी।			
जम्बुदीप	महं	अदल	रोपिहो	हंस	बोधि	लोक
आवहिं	रे	जी।				
अरज	करी	तब	चलेउ	तुरंता	शब्द	सरूप
चलि	आएउ	रे	जी।			
देखत	रहे	निरंजन	तहवां	पाएर	दीप	के
घाटिउ	रे	जी।				
दुनो	भ्राता	मिलु	प्रेमू	सुरति	चारि	पूछवे
बात	बिचारेउ	रे	जी।			
कहां	के	सुरति	कहां	चलि	जाहू	सोई
वचन	निज	भाखहु	रे	जी।		
सुनहु	भ्राता	निजु	कहहु	बिचारी	जम्बूदीप	पग
ढारिउ	रे	जी।				
पुर्खा	हुकुम	अदल	जाए	रोपो	हुकुमी	अदल
चलाएउ	रे	जी।				
एतना	कही	उहां	ते	चलेऊ	उन्हिं	नाहिं
किछु	बोलेउ	रे	जी।			
शब्द	सरूप	चलि	आए	जग	में	मानुख
तन	गुन	गाएउ	रे	जी।		

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
लीन्ह अवतार दर्स तुव पाएउ तुहं से गुन यह गाएउ रे जी ।	यह सभ चरित्र जानि छपाया तुम से सभ कहि दीनेउ रे जी ।	साहि फकर सुनु वचन हमारा मिथ्या वचन जनि जानहु रे जी ।	सकल दफा जो अहै हमारा सुनि लेहु शब्द पुकारेउ रे जी ।	साह फकर कहै बंदी छोरा अब हम तुव गुन जानिउ रे जी ।	जा पर दया करहु चित नीके सोई गति तुव जानिउ रे जी ।	तुवं चरनन्ह की मैं बलि जांऊ अबिगति रूप देखाएउ रे जी ।
सुनहु फकर यह वचन हमारा छुछुम भेद तेहि भाखेव रे जी ।	अगम कथा जुग-जुग ले कहिआ जब लगि सत निसानिउ रे जी ।	दहिने बामें मति कोई देखो मध्य शब्द तुंह पेखाहु रे जी ।	ऐन महल के बाहर दरसै चसम रोसन एक खानिउ रे जी ।	चंद रूप छवि देत देखाई मुरति मध्य तेहि जानिउ रे जी ।	जब लगि मूरति दरसै आई तब लगि हंस घर माहिउं रे जी ।	जब नाहिं दीसै करै पयाना मंकर तार धिंचि भागेव रे जी ।
पांजी मूरति आगे एक देखू रथ सुन्दर तहां छाजेउ रे जी ।	ता चढ़ि हंसा लोक सिधारेव भाएउ संपूरन काजउ रे जी ।	<b>मूरत उखाड़ के साखी</b> दरिया अगम गंभीर है, गहिरे गाड़ा निशान । हलगाये हलगे नहीं, लागा सकल जहान ॥१॥ दरिया मेरो नाम है, दर-दर रहो समाय । पाप पुन्य नहिं व्यापिया, सभ घट देखो जाय ॥२॥ दरिया दाना जानिए, दाना रूप अमान । दाना जो देखत रहे, पावे पद निर्बान ॥३॥ दरिया घट में देखिए, घट दरिए के माह । घट में मूरति मिलि रहे, सुरति मुरति संग नाह ॥४॥ उनुमुनि सूरति लागिया, सुरति उनुमुनि पास । बोलनिहारा बाय संग, बाये बोलन के खास ॥५॥ बाएं इंगला जानिए, पिंगला दहिने बास । मूध्ये सरोसति देखिए, सुखमन अरधे पास ॥६॥				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

17

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------



साखी शब्द ग्रंथ पढ़ि, सीख करे नर नारि।  
 आपन मन बोधा नहीं, दरब हरन के झारि॥२२॥  
 आपा आपी थापिके, मनमत बात पसारि।  
 देहु गुरु करि थापिहें, असल गुरु दुरि डारि॥२३॥  
 जिंदा गुरु अमान हैं, जिंदा सत जग आय।  
 तख्त दीन करि दीन्ह मम, अदल चलाउं जग जाय॥२४॥  
 अदल चलाया जगत में, जिंदा गुरु परताप।  
 साहिजादा चित सुनिए, जम नहीं करते दाप॥२५॥  
 जिंदा गुरु निहचै गहो, वा गुरु सनदि हजूर।  
 वाही सनदि के देखत, जम भागे बड़ि दूर॥२६॥  
 जोग जाप तप ध्यान यह, मन का तर्क अनंत।  
 सहज जोग सूरति नहीं, किमि गुरु देखे कंत॥२७॥  
 अम्मर सूरति सहज है, अम्मर माह समान।  
 इंहा उहां नहीं बीच है, अम्मर सदा अमान॥२८॥  
 जस सूरज असमान में, बादर छाया कीन्ह।  
 आपु अमान सदा रहै, कबै खंडित नहीं दीन्ह॥२९॥  
 बादरि कर्म लगाइया, ताते होय मलीन।  
 बादरि छुटि फरका भई, कछु नहीं दागी दीन॥३०॥  
 रवि के छवि यह छीत पर, यह निर्गुन को भाव।  
 छवि से रवि नहीं होत हैं, निर्गुन सगुन को राव॥३१॥  
 सूरति नेजा गहि हाथ मों, झारु शब्द परचारि।  
 सनमुख हो के जूझिए, मति पीछे पगु डारि॥३२॥  
 तन मन अर्पण कीजिए, सतगुरु आगे शीश।  
 अम्मर मुरति लखाइहें, सो सतगुरु जगदीश॥३३॥  
 कौन शब्द का बोल है, कौन शब्द ले पूछ।  
 कौन शब्द के धाम है, कौन शब्द के मूछ॥३४॥  
 बाय शब्द ले बोलत है, मन संका दर पूछ।  
 जीव शब्द के धाम है निअछर शब्द का मूछ॥३५॥  
 कौन शब्द ले चलत हो, कौन शब्द ले बैठ।  
 कौन शब्द ले गान करत हो, कौन शब्द सिख बैठ॥३६॥  
 तुरे शब्द ले चलत हो, तर्तु शब्द ले बैठ।  
 पौन शब्द ले गान करत हो, बिरह शब्द सिख बैठ॥३७॥